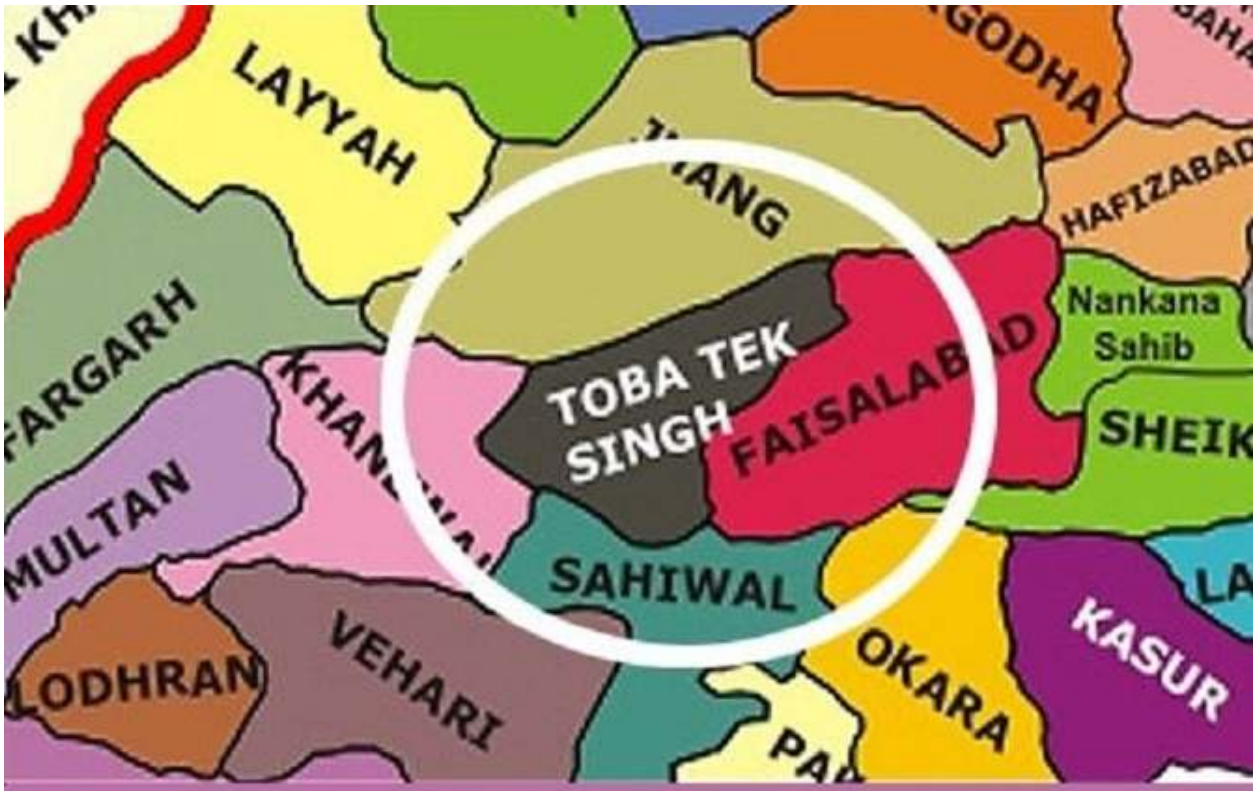
LAYYAH
HAFIZABAD
Nankana
Sahib
TOBA TEK
SINGH
FAISALABAD
MULTAN
SAHIWAL
VEHARI
OKARA
KASUR

सादत हसन मंटो

टोबा टेकसिंह

सादत हसन मंटो

बँटवारे के दो-तीन साल बाद , पाकिस्तान और हिन्दुस्तान की सरकारों को यह ख्याल आया कि नैतिक अपराधियों की तरह पागलों का तबादला भी होना चाहिए । याने जो मुसलमान पागल हिन्दुस्तान के पागलखानो में हैं उन्हें पाकिस्तान पहुँचा दिया जाए और जो हिन्दू और सिक्ख पागल पाकिस्तान के पागलखानो में मौजूद हैं , उनको हिन्दुस्तान के हवाले कर दिया जाए ।

मालूम नहीं , यह बात सही थी या ग़लत , लेकिन विद्वानों के फैसले के मुताबिक , इधर-उधर , ऊँचे स्तर पर कॉन्फ्रेनसें हुई , और आखिर में एक दिन पागलों के तबादले के लिए तय हो गया । अच्छी तरह छान-बीन की गयी । वे मुसलमान पागल , जिनके रिश्तेदार हिन्दुस्तान ही में थे , वहीं रहने दिये गये , जो बाकी बचे उनको सीमा पर भेज दिया गया । यहाँ पाकिस्तान में , चूँकि क़रीब-क़रीब सभी हिन्दू-सिक्ख जा चुके थे , इसलिए किसी को रखने-रखाने का सवाल ही पैदा न हुआ । जितने हिन्दू-सिक्ख पागल थे , सब के सब , पुलिस की हिफाजत में , सरहद पर पहुँचा दिये गये ।

उधर का मालूम नहीं । लेकिन इधर , लाहौर के पागलखाने में , जब इस तबादले की ख़बर पहुंची तो बड़ी दिलचस्प बातें होने लगीं । एक मुसलमान पागल से , जो बारह बरस से बाकायदा हर रोज़ , "ज़मींदार" पढता था , जब उसके एक मित्र ने पूछा , "मौलवी साहब , यह पाकिस्तान क्या होता है ? " तो

उसने बड़े सोच-विचार के बाद जवाब दिया - " हिन्दुस्तान में एक ऐसी जगह है, जहाँ उस्तरे बनाते हैं ।"

यह जवाब सुनकर उसका दोस्त सन्तुष्ट हो गया ।

इसी तरह एक सिक्ख पागल ने दुसरे सिक्ख पागल से पूछा , " 'सरदार जी , हमें हिन्दुस्तान क्यों भेजा जा रहा है ? हमें तों वहाँ की बोली नही आती ।"

दूसरा मुस्कुराया , " मुझे तो हिंदुस्तान की बोली आती है । हिन्दुस्तान बड़े शैतान , आकड़-आकड़ फिरते हैं ।“

एक दिन नहाते-नहाते एक मुसलमान पागल ने " पाकिस्तान ज़िन्दाबाद" का नारा इतने जोर से लगाया कि फ़र्श पर फिसल कर गिरा और बेहोश हो गया।

कई पागल ऐसे भी थे, जो पागल नहीं थे । उनमें ज्यादा तादाद ऐसे कातिलों की थी , जिनके रिश्तेदारों ने कुछ दे-दिला कर उन्हें पागलखाने भिजवा दिया था कि फाँसी के फन्दे से बच जाएँ । ये कुछ-कुछ समझते थे कि हिन्दुस्तान का बँटवारा क्यों हूआ है और पाकिस्तान क्या है । लेकिन सही घटनाओं से वे भी अनजान थे । अख़बारों से कुछ पता नहीं चलता था और पहरेदार सिपाही अनपढ़ और मुर्ख थे ; उनकी बातचीत से भी कोई नतीजा नहीं निकलता था । उनको सिर्फ इतना मालूम था कि एक आदमी मुहम्मद अली जिन्ना है , जिसको " क़ायदे आज़म " कहते हैं । उसने मुसलमानों के लिए एक अलग देश बनाया है जिसका नाम पाकिस्तान है । यह कहाँ है , कहाँ-से-कहाँ तक फैला हुआ है - इसके बारे में वे कुछ नहीं जानते थे । यही वजह है कि पागलखाने में वे सब पागल ,

जिनका दिमाग़ पूरी तरह ख़राब नहीं था , इस असमंजस में थे कि वे हिंदुस्तान में हैं अथवा पाकिस्तान में । अगर हिन्दुस्तान में हैं तो पाकिस्तान कहाँ हैं और अगर वे पाकिस्तान में हैं , तो यह केसै हो सकता है कि कुछ अरसा पहले वे यहीं रहते हुए भी हिन्दुस्तान में थे ।

एक पागल तो पाकिस्तान और हिन्दुस्तान , हिन्दुस्तान और पाकिस्तान के चक्कर में कुछ ऐसा गिरफ्तार हुआ कि और ज़्यादा पागल हो गया । झाड़ू देते-देते एक दिन वह पेड़ पर चढ़ गया और टहनी पर बैठ कर दो घंटे लगातार भाषण देता रहा , जो पाकिस्तान और हिन्दुस्तान की गम्भीर समस्या पर था | सिपाहियों ने उसे नीचे उतरने को कहा तो वह और ऊपर चढ़ गया । डराया-धमकाया गया तो उसने कहा , " मैं न हिन्दुस्तान में रहना चाहता हूँ न पाकिस्तान में । में इस पेड़ पर ही रहूँगा ।"

बड़ी मुश्किलों के बाद जब उसका दौरा सर्द पड़ा तो वह नीचे उतरा और अपने हिन्दू-सिक्ख दोस्तों से गले मिल-मिल कर रोने लगा । इस ख़याल से उसका दिल भर आया था कि वे उसे छोड़ कर हिन्दुस्तान चले जाएँगे ।

एक एम॰एस॰सी॰ पास रेडियो इंजीनियर में , (जो मुसलमान था और दूसरे पागलों से बिलकुल अलग-थलग , बाग़ की एक ख़ास रविश पर सारा दिन ख़ामोश टहला करता था) यह तब्दीली ज़ाहिर हुई कि उसने तमाम कपड़े उतार कर दफ़ेदार के हवाले कर दिये और नंग-धड़ंग सारे बाग़ में चलना-फिरना शुरू कर दिया ।

चिन्नोट के एक मोटे-से मुसलमान पागल ने - जो मुस्लिम लीग का जोशीला सदस्य रह चुका था और दिन में पन्द्रह-सोलह बार नहाया करता या ---- सहसा यह आदत छोड़ दी । उसका नाम मुहम्मद अली था । इसलिए उसने एक दिन अपने जँगले में ऐलान कर दिया कि वह क़ायदे-आज़म मुहम्मद अली जिन्नाह है । उसकी देखा-देखी एक सिक्ख पागल , मास्टर तारा सिंह बन गया । क़रीब था कि उस जंगले में खून-ख़राबा हो जाए , मगर दोनों को ख़तरनाक पागल करार दे कर , अलग-अलग बंद कर दिया गया ।

लाहौर का एक नौजवान हिन्दू वकील था, जो प्रेम में असफल हो कर पागल हो गया था । जब उसने सुना कि अमृतसर हिन्दुस्तान में चला गया है तो उसे बहुत दुख हुआ । उसी शहर में एक हिन्दू लड़की से उसे प्रेम हुआ था । हालाँकि उस लड़की ने उसे ठुकरा दिया था , लेकिन पागलपन की हालत में भी वह उसको नहीं भूला था । चुनाँचे वह उन तमाम हिन्दू-मुसलमान नेताओं को गालियाँ देता था , जिन्होंने मिल-मिला कर हिन्दुस्तान के दो टुकड़े कर दिये । उसकी प्रेमिका हिन्दुस्तानी बन गयी वह पाकिस्तानी ।

जब तबादले की बात शुरू हूई तो वकील को कई पागलों ने समझाया कि वह दिल बुरा न करे , उसको हिन्दुस्तान भेज दिया जाएगा ; जहाँ उसकी प्रेमिका रहती है । मगर वह लाहौर छोड़ना नहीं चाहता था , इसलिए कि उसका ख्याल था कि अमृतसर में उसकी प्रैक्टिस नही चलेगी ।

यूरोपियन वॉर्ड में दो एंग्लो इंडियन पागल थे । उनको जब मालूम हुआ कि हिन्दुस्तान को आज़ाद करके अँग्रेज़ चले गए हैं तो उन्हें बड़ा दुख हुआ । वे

छिप-छिपकर घंटो इस महत्त्वपूर्ण समस्या पर विचार करते कि पागलख़ाने में अब उनकी हैसियत क्या होगी । यूरोपियन वार्ड रहेगा या उड़ा दिया जायगा ? ब्रेकफ़ास्ट मिला करेगा अथवा नहीं ? उन्हें डबल रोटी के बजाय ब्लडी इंडियन चपाती तो नहीं खानी पड़ेगी ?

एक सिक्ख था , जिसे पागलखाने में आये पन्द्रह बरस हो चुके थे । उसके मुँह से हर वक़्त ये अजीबो-ग़रीब शब्द सुनने में आतें थे , " ओं पड़ दी , गुड़गुड़ दी, अनेकस दी , बेध्याना दी , मूँग दी दाल आफ़ दी लालटेन ! " दिन को सोता था न रात को । पहरेदारों का यह कहना था कि पन्द्रह बरस के लम्बे अरसे में , वह पल-भर के लिए भी नहीं सोया था , लेटता भी नहीं था ; अलबत्ता कभी-कभी किसी दीवार के साथ टेक लगा लेता था ।

हर वक्त खड़े रहने से उसके पाँव सूज गये थे । पिंडलियाँ भी फूल गयी थीं , मगर इस शारीरिक कष्ट के बावजूद , वह लेट कर आराम नहीं करता था । हिन्दुस्तान , पाकिस्तान और पागलों के तबादले के बारे में , जब कभी पागलख़ाने में बातचीत होती तो वह ध्यान से सुनता । कोई उससे पूछता कि उसका क्या ख्याल है तो वह बड़ी गम्भीरता से जवाब देता , " ओ पड़ दी , गुड़गुड़ दी , अनेकस दी बेध्याना दी , मूँग दी दाल ऑफ़ दी पाकिस्तान गौरमेंट । "

लेकिन बाद में " ऑफ दी पाकिस्तान गौरमेंट " , की जगह " ऑफ़ दी टोबा टेकसिंह गौरमेंट " ने ले ली और उसने दूसरे पागलों से पूछना शुरू किया कि टोबा टेकसिंह कहाँ , जहाँ का वह रहने वाला है । लेकिन किसी को भी मालूम नहीं था कि वह पाकिस्तान में है या हिन्दुस्तान में । जो बताने की कोशिश करते थे , वे

इस चक्वार में उलझकर रह जाते थे कि सियालकोट पहले हिन्दुस्तान में था पर अब सुना है कि पाकिस्तान में है । क्या मालूम है कि लाहौर , जो आज पाकिस्तान में है , कल हिन्दुस्तान में चला जाए या सारा हिन्दुस्तान ही पाकिस्तान बन जाए । और यह भी कौन सीने पर हाथ रख कर कह सकता था कि हिन्दुस्तान और पाकिस्तान --- दोनों किसी दिन सिरे से ग़ायब ही न हो जाएँ ।

उस सिक्ख के केश छिदरे होकर बहुत थोड़े रह गये थे । चूँकि बहुत कम नहाता था , इसलिए दाढी और सिर के बाल आपस में जम गये थे , जिसकी वजह से उसकी शक्ल बड़ी भयानक हो गयी थी । मगर आदमी निरीह था । पन्द्रह बरसों में उसने किसी से झगड़ा-फ़साद नही किया था । पागलखाने के जो पुराने-पुराने मुलाज़िम थे , वे उसके बारे में इतना जानते थे कि टोबा टेकसिहं में उसके कई खेत थे ; अच्छा खाता-पीता ज़मींदार था कि अचानक दिमाग़ उलट गया । उसके रिश्तेदार उसे लोहे की मोटी-मोटी जंज़ीरों में बाँध कर लाये और पागलखाने में भरती करा गये ।

महीने में एक बार ये लोग मुलाक़ात के लिए आते थे और उसकी खेर-ख़बर पूछ कर चले जाते थे । एक अरसे तक यह सिलसिला जारी रहा । पर जब पाकिस्तान-हिन्दुस्तान की गड़बड़ शुरू हुई तो उनका आना बन्द हो गया ।

उसका नाम बिशन सिंह था , मगर सब उसे टोबा टेकसिंह कहते थे । उसको यह कतई मालूम नहीं था कि दिन कौन-सा है , महीना कौन-सा है या कितने साल बीत चुके हैं । लेकिन हर महीने , जब उसके सगे-सम्बन्धी उससे मिलने के लिए आते थे तो उसे अपने आप पता चल जाता था । चुनाँचे वह दफ़ेदार से कहता कि

उसकी मुलाक़ात आ रही है । उस दिन वह अच्छी तरह नहाता , शरीर पर ख़ूब साबुन मलता और सिर में तेल डाल कर कंघी करता । अपने कपडे , जो कभी इस्तेमाल नहीं करता था , निकलवा के पहनता और यूँ बन-सँवर कर मिलने वालों के पास जाता । वे उससे कुछ पूछते , तो चुप रहता या कभी-कभार --- "ओ पड़ दी , गुड़गुड़ दी , अनेकस दी , बेध्यना दी , मूँग दी दाल ऑफ़ दी लालटेन " कह देता ।

उसकी एक लड़की थी , जो हर महीने एक उँगली बढ़ती-बढ़ती , पन्द्रह बरसों में जवान हो गयी थी । बिशन सिंह उसको पहचानता ही न था । वह बच्ची थी तो अपने बाप को देखकर रोती थी । जवान हुई तब भी उसकी आँखों से आँसू बहते थे।

पाकिस्तान और हिन्दुस्तान का क़िस्सा शुरू हुआ तो उसने दूसरे पागलों से पूछना शुरू किया कि टोबा टेकसिंह कहाँ है ? जब सन्तोषजनक उत्तर न मिला तो उसकी कुरेद दिन-दिन बढ़ती गयी । अब मुलाक़ात भी नहीं आती थी । पहले तो उसे अपने आप पता चल जाता था कि मिलने वाले आ रहे हैं , पर अब जैसे उसके दिल की आवाज़ भी बन्द हो गयी थी , जो उसे उनके आने की सूचना दे दिया करती थी ।

उसकी बड़ी इच्छा थी कि वे लोग आएँ , जो उससे सहानुभूति प्रकट करते थे और उसके लिए फल , मिठाइयाँ और कपड़े लाते थे । वह अगर उनसे पूछता कि टोबा टेकसिंह कहाँ है , तो यक़ीनन उसे बता देते कि पाकिस्तान में है या

हिन्दुस्तान में , क्योंकि उसका ख्याल था कि वे टोबा टेकसिहं ही से आते हैं , जहाँ उसकी ज़मीने हैं ।

पागलख़ाने में एक पागल ऐसा भी था , जो खुद को खुदा कहता था । उससे जब एक दिन बिशन सिंह ने पूछा कि टोबा टेकसिंह पाकिस्तान में है या हिन्दुस्तान में तों उसने अपना स्वाभाविक ठहाका लगाया और कहा , " वह न पाकिस्तान में है , न हिन्दुस्तान में है , इसलिए कि हमने हुक्म नहीं दिया ! "

बिशन सिंह ने उस ख़ुदा से कई बार बड़ी मिन्नत से कहा कि वह हुक्म दे दे , ताकि झंझट ख़त्म हो , लेकिन वह अत्यधिक व्यस्त था , इसलिए कि उसे और बेशुमार हुक्म देने थे । एक दिन तंग आकर वह उसपर बरस पड़ा , " ओ पड़ दी , गुड़गुड़ दी , अनेकस दी , बेध्यना दी , मूँग दी दाल ऑफ़ वाहे गुरु दा खालसा ऐंड वाहे गुरु दी फ़तह । जो बोले सो निहाल , सत्त श्री अकाल ! "

इसका शायद यह मतलब था कि तुम मुसलमानों के खुदा हो , सिक्खों के खुदा होते तो ज़रूर मेरी सुनते ।

तबादले से कुछ दिन पहले , टोबा टेकसिंह का एक मुसलमान , जो बिशन सिंह का दोस्त था, मुलाक़ात के लिए आया । पहले वह कभी नहीं आया था । जब बिशन सिंह ने उसे देखा तो एक तरफ़ हट गया और वापस जाने लगा , मगर सिपाहियों ने उसे रोका, "यह तुमसे मिलने आया है , तुम्हारा दोस्त फज़लदीन है । "

बिशन सिंह ने फ़ज़लदीन की ओर देखा और कुछ बड़बड़ाने लगा । फ़ज़लदीन ने आगे बढ़कर , उसके कन्धे पर हाथ रखा , " मैं बहुत दिनों से सोच रहा था कि तुमसे मिलूँ, लेकिन फुरसत ही न मिली । तुम्हारे सब आदमी खैरियत से हिन्दुस्तान चले गये हैं । मुझसे जितनी मदद हो सकी , मैंने की । तुम्हारी बेटी रूप कौर ..... "

वह कुछ कहते-कहते रुक गया । बिशन सिंह कुछ याद करने लगा , " बेटी रूप कौर ।"

फ़ज़लदीन ने रुक-रुक कर कहा , " हाँ . . . वह . . . . . वह भी ठीक-ठाक है । उनके साथ ही चली गयी थी । "

बिशन सिंह चुपचाप खड़ा रहा । फ़ज़लदीन ने कहना शुरू किया , " उन्होंने मुझसे कहा था कि तुम्हारी ख़ैर-खैरियत पूछता रहूँ । अब मैंने सुना है कि तुम हिन्दुस्तान जा रहे हो । भाई बलबीर सिंह और भाई बधावा सिंह से मेरा सलाम कहना और बेहन अमृत कौर से भी । ..... भाई बलबीर से कहना कि फ़ज़लदीन राज़ी-ख़ुशी है । दो भूरी भैंसे , जो वे छोड़ गये थे , उनमें से एक ने पाड़ा दिया है ; दूसरी के पाड़ी हुई थी , पर वह छै दिन की होके मर गयी । ..... और मेरे लायक़ जो ख़िदमत हो , कहना । मैं हर वक़्त तैय्यार हूँ । और तुम्हारे लिए ये थोड़े-से मरूँडे लाया हूँ । "

बिशन सिंह ने मरूँडे की पोटली लेकर , पास खड़े सिपाही के हवाले कर दी और फ़ज़लदीन से पूछा , " टोबा टेकसिंह कहाँ है ? "

फ़ज़लदीन ने ज़रा हैरत से कहा , " कहाँ है ? वहीं है , जहाँ था । "

बिशन सिह ने फिर पछा , " पाकिस्तान में या हिन्दुस्तान में ? "

" हिन्दुस्तान में . . . नही , नहीं . . . पाकिस्तान में ! " . . . . . फ़ज़लदीन बौखला-सा गया ।

बिशन सिंह बड़बड़ाता हुआ चला गया , " ओ पड़ दी , गुड़गुड़ दी , अनेकस दी , बेध्याना दी , मूँग दी दाल ऑफ़ दी पाकिस्तान ऐंड हिन्दुस्तान ऑफ़ दी दुर-फिट्टे मुँह ! "

तबादले की तैयारियाँ पूरी हो चुकी थी । इधर-से-उधर और उधर-से-इधर आने वाले पागलों की सूचियाँ पहुँच गयी थीं और तबादले का दिन भी तय हो चुका था ।

सख्त सर्दी पड़ रही थी , जब लाहौर के पागलखाने से हिन्दू-सीक्ख पागलों से भरी लारियाँ , पुलिस के रक्षक दस्तों के साथ , रवाना हुई । सम्बन्धित अफ़सर भी साथ थे । वागा की सरहद पर दोनों और के सूपरिटेंडेंट एक-दुसरे से मिले और आरम्भिक कार्यवाई ऱ्व्रत्म होने के बाद तबादला शुरू हो गया जो रात-भर जारी रहा ।

पागलों को लारियों से निकालने और उनको दूसरे अफ़सरों के हवाले करना बड़ा मुश्किल काम था । कई तो लारियों से निकलते ही न थे ; जो निकलना मंज़ूर कर लेते थे , उनको संभालना मुश्किल हो जाता था , क्योंकि वे इधर-उधर भाग खडे होते थे । जो नंगे थे , उनको कपडे पहनाये जाते तो वे उन्हें फाड़कर अपने

तन से अलग कर देते । कोई गालियाँ बक रहा है , कोई गा रहा है , आपस में लड़-झगड़ रहे हैं , रो रहे हें , बिलख रहे हैं । कान पड़ी आवाज़ सुनायी नहीं देती थी । पागल औरतों का शोर-गुल अलग था और सर्दी इतनी कड़ाके की थी कि दाँत-से-दाँत बज रहे थे ।

पागलों का बहुमत इस तबादले के हक़ में नहीं था । इसलिए कि उनकी समझ में नहीं आ रहा था कि उन्हें अपनी जगह से उखाड़कर कहाँ फेंका जा रहा है । वे कुछेक , जो सोच-समझ सकते थे , "पाकिस्तान ज़िन्दाबाद" और “पाकिस्तान मुर्दाबाद” के नारे लगा रहे थे । दो-तीन बार फ़साद होते-होते बचा , कयोंकि कुछ मुसलमानों और सिक्खों को यह नारे सुन कर तैश आ गया था ।

जब बिशन सिंह की बरी आयी और वागा के उस पार सम्बन्धित अफ़सर उसका नाम रजिस्टर में दर्ज करने लगा तो उसनें पूछा , " टोबा टेकसिंह कहाँ है ? पाकिस्तान में या हिन्दुस्तान में ? "

अफ़सर हँसा, " पाकिस्तान में । "

यह सुनकर बिशन सिंह उछलकर एक ओर हटा और दौड़कर अपने बाकी साथियों के पास पहुँच गया । पाकिस्तान सिपाहियों ने उसे पकड़ लिया ओर दूसरी ओर ले जाने लगे । मगर उसने चलने से इनकार कर दिया ।

" टोबा टेकसिंह कहाँ है ? " और ज़ोर-ज़ोर से चिल्लाने लगा , " ओ पड़ दी , गुड़गुड़ दी , बेध्याना दी , मूँग दी दाल ऑफ़ टोबा टेकसिंह ऐंड पाकिस्तान ! "

उसे बहुत समझाया गया कि देखो , अब टोबा टेकसिंह हिन्दुस्तान में चला गया है । अगर नहीं गया , तो उसे तुरन्त वहाँ भेज दिया जाएगा , मगर वह न माना । जब उसको बरबस दूसरी ओर ले जाने की कोशिश की गयी तो वह बीच में एक जगह इस तरह अपनी सूजी हुई टाँगों पर खड़ा हो गया , जैसे अब कोई शक्ति उसे वहाँ से नहीं हिला सकेगी ।

आदमी चूँकि निरीह था , इसलिए उससे ज़्यादा ज़बरदस्ती न की गयी । उसको वहीँ खड़ा रहने दिया गया और तबादले का बाकी काम होता रहा ।

सूरज निकलने से पहले , निश्चेष्ट और अचल खड़े बिशन सिंह के कंठ से एक गगन-भेदी चीख़ निकली । इधर-उधर से कई अफ़सर दौड़े आये और देखा कि वह आदमी , जो पन्द्रह बरस तक दिन-रात अपनी टाँगों पर खड़ा रहा था , औंधे मुँह लेटा है ।

उधर काँटेदार तारों के पीछे हिन्दुस्तान था , इधर ऐसे ही तारों के पीछे पाकिस्तान ! बीच में , ज़मीन के उस टुकडे पर , जिसका कोई नाम नहीं था , टोबा टेकसिंह पड़ा था ।

भासिका

www.bhasika.com